भाषा-विज्ञान की शाखाएँ

Sem-4, MJ-6

भाषा मानव जाति के विकास में महत्वपूर्ण आविष्कार के रूप में सर्वमान्य है और भाषा के विभिन्न पहलुओं का व्यवस्थित-वैज्ञानिक अध्ययन ही भाषा-विज्ञान है। इन्हीं विभिन्न पहलुओं का अध्ययन ही भाषा-विज्ञान की शाखाएँ हैं। मोटे तौर पर इन शाखाओं की तीन कोटियाँ बनायी जा सकती हैं —

(क) भाषा-विज्ञान की प्रमुख अथवा केन्द्रीय शाखाएँ — हम जानते हैं कि भाषा के मुख्यतः चार अंग या तत्व हैं - ध्वनि, रूप, वाक्य और अर्थ। इन्हीं अंगों से जुड़ा अध्ययन इसकी प्रधान शाखाएँ हैं —

① ध्वनिविज्ञान (Phonetics) - ध्वनि से संबंधित अवयवों (मुख विवर, नासिका विवर, स्वरतंत्री, ध्वनि-यंत्र), ध्वनि उत्पन्न होने की क्रिया, ध्वनि-लहर, सुनने की क्रिया का अध्ययन होने के साथ-साथ ध्वनि-परिवर्तन के कारणों, दशाओं का विश्लेषण भी किया जाता है।

② रूप या पद विज्ञान (Morphology) — भाषा में प्रयुक्त शब्द ही पद कहलाते हैं। इस शाखा के अंतर्गत संबंधतत्व, उसके प्रकार एवं रूप, व्याकरणिक विकास और कारण के साथ-साथ धातु, उपसर्ग, प्रत्यय आदि पद-निर्माण के उपकरणों का अध्ययन होता है।

③ वाक्यविज्ञान (Syntax) — भाषा का उद्देश्य वाक्य द्वारा ही पूरा होता है। इस शाखा में वाक्य का अध्ययन पदक्रम, अन्वय, निकटस्थ अवयव, केन्द्रिकता, परिवर्तन के कारण और उनकी दिशाओं की दृष्टि से होता है।

④ अर्थविज्ञान (Semantics) — यह भाषा की आत्मा है। अर्थविज्ञान में प्रमुखतः शब्दों के अर्थ-निर्धारण, उसके स्तर, उसमें परिवर्तन के कारणों और दिशाओं पर विचार किया जाता है।

(ख) भाषा-विज्ञान की गौण शाखाएँ — भाषा-अध्ययन में केवल भाषा-वैज्ञानिक ही नहीं, अन्य विषयों के विशेषज्ञ भी जुड़ते हैं। अर्थात् मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र, मानवशास्त्र, साहित्य आदि से जुड़ी भाषिक समस्या का अध्ययन भी अपेक्षित है। कुछ प्रमुख गौण शाखाएँ हैं —

① भाषिक भूगोल - यहाँ भाषा भाषी भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर अध्ययन होता है।

② मनोभाषाविज्ञान — भाषा पर पड़नेवाले मनोवैज्ञानिक प्रभाव का अध्ययन यहाँ किया जाता है।

③ समाजभाषाविज्ञान — भाषा और समाज के संबंधों तथा विभिन्न सामाजिक स्तरों द्वारा प्रयुक्त भाषिक विशेषता का यहाँ अध्ययन होता है

~~4. सर्वेक्षण विज्ञान~~

4. भाषा की सर्वेक्षण-पद्धति — भाषा के नमूनों को एकत्र करने, उसका विश्लेषण करने तथा विशेषता ज्ञात करने के लिए सर्वेक्षण-पद्धति का उपयोग होता है।

5. भाषा कालक्रम विज्ञान — किसी भाषा के आधारभूत शब्दों में पुराने और नये तत्वों का अध्ययन सांख्यिकी के आधार पर किया जाता है।

6. नृजाति भाषा विज्ञान — इस शाखा में आदिम जनजाति की भाषा का अध्ययन कर महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

7. भाषा प्रागैतिहास विज्ञान — इस शाखा द्वारा भाषा के आधार पर प्रागैतिहास काल की संस्कृति का अध्ययन किया जाता है।

8. शैली विज्ञान — प्रत्येक मनुष्य की भाषा में शैलीगत भिन्नता एवं साहित्य जगत में प्रयुक्त विभिन्न शैलियों का अध्ययन यहाँ होता है।

9. लिपि विज्ञान — भाषा की लिखित अभिव्यक्ति लिपि के माध्यम से होती है। इस शाखा में लिपि की उत्पत्ति, विकास, उपयोगिता और सुधार के उपायों पर विचार होता है।

(ग) अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान की शाखाएँ — आज के दौर में अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान द्रुतगति से विकास कर रहा है। इसकी प्रमुख शाखाएँ हैं —

(1) भाषा-शिक्षण — मातृभाषा से भिन्न भाषा के शिक्षण में आने वाली समस्याओं, उसके स्वरूपों का अध्ययन कर सुगम शिक्षण-विधि प्रस्तुत करना इस शाखा का उद्देश्य है।

(2) कोश-विज्ञान — कोशकार भाषा के शब्दों का संग्रहण कर उन्हें अकारादि क्रम से सजाकर उनके अर्थों एवं अर्थ-छायाओं, संदर्भों आदि का विधान करता है। इस कार्य में भाषा-अध्ययन उसके सहायक ~~होती है~~ होते हैं।

(3) व्युत्पतिशास्त्र — इस शाखा में शब्दों की व्युत्पत्ति संबंधी प्रश्न सुलझाए जाते हैं।

(4) अनुवाद विज्ञान — एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद की व्यावहारिक समस्याओं से यह शाखा जुड़ती है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भाषा-विज्ञान की विभिन्न शाखाएँ मानवजाति की ज्ञान-विज्ञान से जुड़ी अनेक समस्याओं-प्रश्नों का समाधान करती हैं। इन शाखाओं के विकास से भाषा-विज्ञान की उपादेयता अधिक बढ़ जाती है।